भारत-दुर्दैव का चरित्र चित्रण कीजिए।
अथवा
भारत-दुर्दशा नाटक में भारत-दुर्दैव की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालें।

⇒ परिचय :-

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के युग-निर्माता भारतेंदु हरिश्चन्द्र कृत भारत-दुर्दशा नाटक राष्ट्रीय भावना एवं समाज केंद्रित विषय पर आधारित एक प्रौढ़ रचना है। जिसमें भारत के तात्कालिक स्थिति का सजीव चित्र खींचा गया है। भारत वर्ष का नेतृत्व करने के लिए भारत को एक पात्र चुना गया है जो अपनी दीन-हीन दशा से पूर्णत: पीड़ित है। भारतेंदु ने इस नाटक में भारत पात्र के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दुर्दशा, दुर्गति का मार्मिक चित्रण किया है। वहीं भारत में रक्तपात, आतंक एवं भय फैलाने वाले सत्यनाश फौज के सरदार भारत-दुर्दैव हैं।

भारत-दुर्दैव :-

भारत-दुर्दशा नाटक के तीसरे अंक में भारत-दुर्दैव का प्रवेश होता है। इनके आते ही भारत की रही-सही आशा पर भी पानी फिर जाती है। भय दिखाकर वह भारत को कँपकँपा देता है। भारत-दुर्दैव अंग्रेजों का प्रतीक है इसीलिए अंग्रेजों के पक्ष में बोलने वाले को पुरस्कार और विपक्ष में बोलने

Truth can be stated in a thousand different ways, yet each one can be true. - Swami Vivekananda

वाले को यातना दी जाती है।

भारत दुर्दैव क्रूर, निरंकुश एवं दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति है। जिसकी वेशभूषा आधा क्रिस्तानी और आधा मुसलमानी की है जो हाथ में नंगी तलवार लिए है। अपने कोप के प्रभाव का गुणगान करते हुए गीत गाता है -

उपजा ईश्वर कोप से, औ आया भारत बीच।
छार-खार सब हिंद करूँ मैं, तो उत्तम नहिं नीच।।

भारत-दुर्दैव के चरित्र में लोगों के प्रति हीन भावना एवं दृष्टि है। जो चंद पढ़े-लिखे लोग हैं उनकी मजाक उड़ाता है। ऐसे व्यक्तियों की उसकी नजर में कोई कीमत नहीं है। वह कहता है- " हा, हाहा! कुछ पढ़े-लिखे मिलकर देश सुधारना चाहते हैं! हा, हाहा! एक चने से भाड़ फोड़ेंगे। " प्रतिनायक भारत-दुर्दैव, भारत को घेरने एवं विध्वंस करने के लिए चक्रव्यूह की रचना करता है। वह कहता है कि भारत मूर्ख है उसे अब भी परमेश्वर और राजराजेश्वरी पर भरोसा है। हम सभी प्रकार से इसकी दुर्दशा करेंगे। इसे हम कौड़ी कौड़ी के लिए मुहताज करेंगे। वह यह भी कहता है कि वह सभी ओर आलस और निराशा फैलाएगा। भारत-दुर्दैव के इन मनसूबों को पूर्णता देने के लिए सत्यानाश फौजदार सहयोग देता है। सत्यानाश फौजदार की सेना में रोग, आलस्य, मदिरा, अंधकार मौजूद हैं जो भारत-दुर्दैव के कहने पर सभी मिलकर भारत में जाति, धर्म एवं विधवा विवाह निषेध आदि

के नाम पर लोगों में मतभेद निर्माण कर उनमें फूट, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थ परकता, पक्षपात, हठ, शोक, विशाद और निर्बलता आदि का वातावरण तैयार करके भाषा, धर्म, रहन-सहन, खान-पान आदि के सहारे उनको एक-दूसरे से अलग करने का कुकर्म करता है।

भारत-दुर्दैव की चारित्रिक विशेषताएँ :-

भारत-दुर्दैव की निम्न चारित्रिक विशेषताएँ हैं -

(i) भारत-दुर्दैव क्रूर है।
(ii) भारत-दुर्दैव निरंकुश है।
(iii) भारत-दुर्दैव आधा क्रिस्तानी एवं आधा मुसलमान है।
(iv) भारत-दुर्दैव अंग्रेजों का प्रतीक है।
(v) इसकी नियत विध्वंसकारी है।
(vi) भारत-दुर्दैव दुष्ट प्रवृति का है।
(vii) भारत-दुर्दैव अज्ञानता का प्रतीक है।

निष्कर्ष :-

इस तरह हम कह सकते हैं कि भारत-दुर्दैव समाज में कुरीति फैलाकर अपना वर्चस्व दिखाने वाली प्रवृत्ति का दुष्ट व्यक्ति है। इसके विचार किसी भी दृष्टि से भारत को उन्नत नहीं होने देने का प्रतीक है। भारत-दुर्दैव भारत में अज्ञानरूपी अंधकार फैलाकर लोगों को गुमराह करता है और लोगों के वर्तमान और भविष्य को अंधेरे में डाल देता है।